# रिमझिम 5

**पाँचवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक**

यह किताब ______________ की है।

© NCERT not to be republished

**प्रथम संस्करण**

*फरवरी 2008 माघ 1929*

**पुनर्मुद्रण**

*जनवरी 2009 पौष 1930*

*जनवरी 2010 माघ 1931*

*जनवरी 2011 माघ 1932*

*जनवरी 2012 माघ 1933*

*अक्तूबर 2012 आश्विन 1934*

*अक्तूबर 2013 आश्विन 1935*

*दिसंबर 2014 पौष 1936*

*फ़रवरी 2017 माघ 1938*

*दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939*

**PD 325T RPS**

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008***

**₹ 55.00**

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।*

*प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा हाई-टेक ग्राफ़िक्स, एफ़-23, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेस-I, नयी दिल्ली - 110 020 द्वारा मुद्रित।*

**ISBN 978-81-7450-811-9**

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नयी दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
**बैंगलूर 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
**गुवाहाटी 781021** फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग | : | *एम. सिराज अनवर* |
| मुख्य संपादक | : | *श्वेता उप्पल* |
| मुख्य व्यापार प्रबंधक | : | *गौतम गांगुली* |
| मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) | : | *अरुण चितकारा* |
| *संपादक* | : | *मरियम बारा* |
| उत्पादन सहायक | : | *दीपक जैसवाल* |

**आवरण** — *दुर्गा बाई*

**सज्जा** — *जॉएल गिल*

**चित्रांकन**

*अत्रैयी सिकदर* *कनक शशि*
*जॉएल गिल* *बारान इज्लाल*
*मीता जौहर दत्ता* *शालू शर्मा*

**छायाचित्र**

*निमिषा कपूर (पृ. 34, 140)*
*राजेश बेदी (पृ. 126, 127)*

© NCERT not to be republished

# आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव करने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

© NCERT not to be republished

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

*निदेशक*
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
*30 नवंबर 2007*

© NCERT not to be republished

# बड़ों से दो बातें

## इस रिमझिम में

रिमझिम-5 आपके हाथों में है। इसके ताने-बाने को चार सूत्रों में पिरोया गया है। हर सूत्र का अपना रंग और अपनी छटा है। **अपनी-अपनी रंगतें** के अंतर्गत रीति-रिवाज, जीवन-शैली, हुनर, विरासत और बोली आदि संस्कृति के विभिन्न आयामों की झलक है। इस भाग को पढ़ाते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी होगा कि सांस्कृतिक विविधता के बारे में शिक्षक का स्वयं का ज्ञान ही इन पाठों को बच्चे के लिए जीवंत बना सकता है। इस भाग के माध्यम से रिमझिम-5 हमारी अनमोल विरासत को सहेजने का प्रयास है।

अभिव्यक्ति के कई माध्यम हैं। समय के साथ-साथ इन माध्यमों में भी बदलाव आया है। अपनी बात लोगों तक पहुँचाने का तरीका समय के साथ कैसे बदलता रहा है पुस्तक के दूसरे भाग **बात का सफ़र** में इसी रोचक सफ़र की झलक है।

हास्य रचनाएँ सभी को गुदगुदाती हैं। बच्चे हास्य के पुट वाली रचनाओं में विशेष रुचि लेते हैं। पुस्तक के तीसरे भाग **मज़ाखटोला** में हास्य-व्यंग्य से पगी रचनाएँ और कार्टून दिए गए हैं। शिक्षक का हास्य बोध इन रचनाओं के साथ कक्षा-शिक्षण को भी रुचिकर बनाता है।

रिमझिम-5 के अंतिम भाग **आस-पास** में दी गई रचनाएँ हमारे पर्यावरण को समझने और उसके प्रति संवेदनशीलता को उपजाने की शुरुआत हैं। इस भाग के अंतर्गत दिए पाठों में भौतिक और जैव, दोनों ही किस्म के पर्यावरण के प्रति जागरूकता सरस साहित्य और गतिविधियों के माध्यम से दी गई है।

प्रत्येक भाग की शुरुआत में उस भाग की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। यह परिचय शिक्षक के लिए उन पाठों में निहित भावनाओं को बच्चों तक पहुँचाने में सहायक होगा।

## रचनाओं में विविधता

यह विविधता हमें दो रूपों में देखने को मिलेगी, एक तो विषयवस्तु के रूप में, दूसरी विधाओं के रूप में। विषयों के साथ विधाओं का बड़ा फलक रिमझिम-5 में है। पिछले दो वर्षों में रिमझिम-3 और 4 के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाएँ-कहानी, कविता, पत्र, नाटक आदि बच्चे पढ़ चुके हैं। रिमझिम-5 में इन विधाओं के अलावा खबर, उपन्यास अंश, सूचनापरक लेख, भेंटवार्ता, शिकार कथा, विज्ञान कथा तथा यात्रा-वर्णन दिया गया है। शिक्षक इन पाठों को पढ़ाते समय उस विधा में उपलब्ध अन्य सामग्री का भी इस्तेमाल करें, जैसे – **डाकिए की कहानी कँवरसिंह की ज़ुबानी** भेंटवार्ता को पढ़ाते समय अखबार, रेडियो, टी.वी. पर आने वाली भेंटवार्ताओं की ओर भी बच्चों का ध्यान दिलाएँ। इन सभी में भेंटवार्ताएँ नियमित रूप से आती हैं। इनकी ओर ध्यान दिलाने से भेंटवार्ता के तरीकों से बच्चे भली-भाँति अवगत हो सकेंगे। इसी प्रकार **स्वामी की दादी** पढ़ाने के दौरान बच्चों

© NCERT not to be republished

को कुछ ऐसे उपन्यास पढ़ने के लिए प्रेरित करें जो बच्चों के लिए ही लिखे गए हैं। जैसे–**कलवा** (मन्नू भण्डारी), **एक डर, पाँच निडर** (सत्य प्रकाश अग्रवाल), **गब्बर सिंह और उसके दोस्त** (श्रीलाल शुक्ल), **स्वामी और उसके दोस्त** (आर. के. नारायण)। इस प्रकार की सामग्री बच्चों में बाल साहित्य पढ़ने में रुचि जगा सकती है। शिक्षकों का यह प्रयास बच्चों को अगली कक्षा में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री को समझने में भी मदद करेगा।

रिमझिम–5 को पढ़ाते समय बच्चों को साहित्यिक विधाओं का परिचय देना उपयोगी होगा। विधा साहित्य के अलग–अलग रूपों की ओर इशारा करने वाली विशेषता है। साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ– कविता, कहानी, नाटक, यात्रा संस्मरण, पत्र आदि कई रूप ले लेती हैं। इन्हीं रूपों को विधा कहते हैं। प्रसार माध्यमों के विकास के साथ साहित्य से कई नई विधाएँ भी जुड़ी हैं। उन्हें भी इस किताब में शामिल किया गया है। रिमझिम–5 के लिए रचनाएँ यह ध्यान में रखकर चुनी गई हैं कि वे बच्चों की बढ़ती हुई जिज्ञासाओं और रुचियों को प्रतिबिंबित करें। इस आयु के बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत ऊर्जावान होते हैं। वे अपने आस–पास ही नहीं बल्कि दूरस्थ संसार को भी समझने की अपने तरीकों से कोशिश करते हैं। रिमझिम में ली गई रचनाओं का संबंध पूरे देश और दुनिया के अन्य भागों से भी है। पढ़ाते समय बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखें ताकि वे अपनी कल्पना और अनुमान ही नहीं बल्कि विभिन्न माध्यमों और किताबों से दुनिया को जान सकें।

## रचनाकारों से रूबरू

रिमझिम–5 में कई साहित्यकारों की रचनाएँ ली गई हैं। जैसे–प्रेमचंद, सुभद्रा कुमारी चौहान, नागार्जुन, सोहनलाल द्विवेदी, आर.के.नारायण आदि। आने वाली कक्षाओं में साहित्य से बच्चों का परिचय उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। रचनाओं को गहराई से समझने के लिए उनके लेखकों का परिचय उपयोगी है। ऐसा ही प्रयास रिमझिम में किया गया है। रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित **छोटी–सी हमारी नदी** कविता के बाद दिया गया पाठ **जोड़ासाँको वाला घर** रवींद्रनाथ के बचपन की झलक देता है। **खिलौनेवाला** कविता और **ईदगाह** कहानी पढ़ाने के बाद परिषद् द्वारा विकसित सुभद्रा कुमारी चौहान और प्रेमचंद पर बनी फिल्में दिखाई जा सकती हैं। यह फिल्में केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली से प्राप्त की जा सकती हैं।

## परिवेश के प्रति सजगता

बच्चों की एक स्वभावगत विशेषता है अपने परिवेश के प्रति जिज्ञासा रखना और उसका अवलोकन करना। इस स्तर तक आते–आते बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि आस–पास के परिवेश में उपलब्ध सामग्री में रुचि ले और उसका विश्लेषण कर सके। शिक्षक की स्वयं की रुचि तथा रचनात्मकता बच्चों को इस कसौटी पर खरा उतारने में मददगार साबित होती है। हमारे परिवेश में उपलब्ध विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्डों में मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों के साथ–साथ बोलने के कई प्रचलित तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। इस ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े विषयों पर जैसे – खाना–पीना, मौजमस्ती, खेल, सेहत, त्योहार आदि पर बच्चे इस तरह

© NCERT not to be republished

की सामग्री बना सकते हैं। शिक्षक रिमझिम-5 के माध्यम से इस प्रकार शिक्षण करें कि बच्चे भाषा को अपने परिवेश और अनुभवों को समझने का माध्यम मानकर उसका सार्थक प्रयोग कर सकें।

## भाषा की बनावट

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व्याकरण की अवधारणाओं को विविध किस्म के पाठों के संदर्भ में पहचानकर उनका उचित प्रयोग करने का सुझाव देती है। रिमझिम श्रृंखला के अन्य भागों की तरह रिमझिम-5 में भी अभ्यासों के माध्यम से भाषा की बनावट के सार्थक प्रयोग पर बल दिया है। व्याकरण को एक कठोर यांत्रिक पृथक् अनुशासन के रूप में न सुझाकर सहज रूप में प्रस्तुत करना ही बेहतर होगा।

## बहुभाषिकता

हमारे देश की भाषिक विविधता हमारा एक भाषायी संबल है। हिंदी की पारंपरिक बोलियाँ भारत की विरासत का अंग हैं। हर बोली का अपना लहज़ा होता है। पर अक्सर यह देखा जाता है कि बच्चे जब कक्षा में अपने घर में बोली जाने वाली बोली में बात करते हैं या शिक्षक द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब अपनी बोली में देते हैं तो शिक्षक उसे तुरंत टोक देते हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चे सहज अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास खो देते हैं और कक्षा की मानक भाषा के ढाँचे में ढलने की असफल कोशिश करते हैं। इसके विपरीत अपनी बोली में अभिव्यक्ति को सम्मान मिलने पर धीरे-धीरे आत्मविश्वास से भर उठते हैं और मानक भाषा भी सीख जाते हैं। बहुत-से साहित्यकार जैसे- फणीश्वरनाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी इस बात का जीवंत उदाहरण हैं। **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने पर बल देती है।** रिमझिम भाग 1 से 4 तक पिछली चारों पाठ्यपुस्तकों में बहुभाषिकता को स्थान देने के लिए अन्य भाषाओं से भी सामग्री ली गई है तथा अभ्यासों और गतिविधियों के अंतर्गत बच्चों को अपनी भाषा में लिखने, बोलने के अवसर भी दिए गए हैं। रिमझिम-5 में भी यह सिलसिला जारी है। ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षक बच्चों को अपनी भाषा और बोली का इस्तेमाल करने का मौका कक्षा में अवश्य दें।

## शब्दकोश से परिचय

बोलने-चालने में एक दूसरे की बोली समझना बहुत आसान होता है पर वही बोली जब लिखित रूप में सामने आ जाती है तो कई बार शब्दकोश का सहारा लेना ज़रूरी हो जाता है। बच्चे शब्दकोश से पहचान बनाएँ और उसे देखने की आदत डालें इसके लिए रिमझिम-5 में शब्द-अर्थ शब्दकोश के क्रमानुसार दिए गए हैं। इस काम में शिक्षक की मदद उन्हें शब्दकोश से आत्मीय रिश्ता जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी।

## कला और सौंदर्यबोध

साहित्य का कलाओं से सीधा संबंध होता है। **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 कला के माध्यम से अन्य विषयों को जोड़ने पर बल देती है।** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भारत की हस्तकला पर विशेष बल दिया गया है। **जहाँ चाह वहाँ राह** पाठ कसीदाकारी के महत्व को

© NCERT not to be republished

दर्शाता है। इस पाठ को पढ़ाने के दौरान अपने आस-पास के कारीगरों को बुलाएँ और प्रचलित हस्तकला का व्यावहारिक अनुभव बच्चों को दिलवाएँ। एक विकल्प यह भी हो सकता है कि अवसर एवं सुविधा होने पर इन कारीगरों तक बच्चों को स्कूल से ले जाएँ। इस प्रकार के अनुभव बच्चों के लिए बहुत मूल्यवान होते हैं और किसी अन्य अनुभव के विकल्प नहीं हो सकते।

शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि साहित्य के माध्यम से बच्चों में सौंदर्य बोध का विकास करें। जैसे किसी कविता को पढ़ने के बाद उस कविता को कैसे गाया जा सकता है, धुन में कैसे ढाला जा सकता है या कहानी को नाटक का रूप देकर रंगमंच पर अभिनीत करना। इससे कहानी या कविता के भाव पूर्णतया जीवंत हो उठेंगे और उसका अंतर्निहित अर्थ सजीव हो उठेगा।

बच्चों के लिए किसी भी पाठ्यपुस्तक का मुख्य आकर्षण उसके चित्र होते हैं। रिमझिम श्रृंखला चित्रों से सराबोर है। रिमझिम 1 से रिमझिम 5 तक आते-आते किताब में भाषा, विषयवस्तु आदि में बच्चे की बढ़ती आयु के अनुसार परिपक्वता आई है। ऐसा ही बदलाव चित्रों के स्वरूप में दिखाई देता है। लेकिन प्रयास किया गया है कि उनका आकर्षण बरकरार रहे।

## संवेदनशीलता का विकास

भाषा और साहित्य की पढ़ाई का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य हमारी संवेदनशीलता का विकास करना होता है। **एक माँ की बेबसी, जहाँ चाह वहाँ राह, रात-भर बिलखते-चिंघाड़ते रहे** रचनाएँ इसी बात को मद्दे-नज़र रखते हुए दी गई हैं। उम्मीद की जाती है कि रिमझिम-5 में दी गई रचनाएँ पढ़ते-पढ़ाते समय शिक्षक उनमें निहित भावनाओं पर बच्चों के मन में उठी हलचल जान सकेंगे। इन रचनाओं से मिलती-जुलती अन्य रचनाएँ भी प्रस्तुत करें। ऐसी स्थितियों पर स्वयं रचना करें और बच्चों को कुछ लिखने के लिए भी प्रेरित करें। जैसे – किसी जानवर को सताते या किसी पेड़ को नुकसान पहुँचाते तुम देखते हो तो लिखो कि ऐसी स्थिति में पेड़ या जानवर को कैसा लगता होगा? साहित्यिक लेखन भावनात्मक विस्तार को फैलाने का एक अच्छा अवसर बच्चों को देता है।

रिमझिम 3 और 4 की तरह रिमझिम 5 में भी कुछ रचनाएँ (तारांकित रचनाएँ) सिर्फ़ पढ़ने के लिए दी गई हैं। इन पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँ बस बच्चों को इन्हें पढ़ने का आनंद लेने दें। ये रचनाएँ बच्चों को एक उत्साही पाठक बनने की ओर अग्रसर करेंगीं।

पाँचवीं कक्षा प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के बीच एक सेतु है। इसमें शिक्षक पहले अर्जित भाषायी कौशलों का पूर्ण विकास करने की कोशिश करें। शिक्षक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि प्रत्येक बच्चे के भाषायी कौशलों की जाँच ऐसे करें कि कोई भी बच्चा न छूटे। इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यद्यपि इस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में सामग्री दी गई है लेकिन फिर भी दी गई विषय-सामग्री से इतर सामग्री भी बच्चों को दें। भाषा के उद्देश्य एक पाठ्यपुस्तक से पूरे नहीं किए जा सकते। इस बात की चर्चा परिषद् द्वारा विकसित शिक्षक संदर्शिका **कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग 1 और 2** में की गई है। यह संदर्शिका प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है।

उदाहरण के लिए, जोड़ासांको वाला घर शीर्षक रचना में एक जगह खयाल के रूप में उल्लेख है कि लड़कियाँ नीचे उतरते समय पहले बायाँ पैर उठाती हैं। कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा करते हुए जेंडर से जुड़ी रूढ़िवादी सोच को तर्क के आधार पर समाप्त करने की कोशिश करें।



© NCERT not to be republished

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

**अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति**

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

**मुख्य सलाहकार**

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता*, मिरांडा हाउस, नयी दिल्ली

**सदस्य**

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक सहशिक्षा विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

अपूर्वानंद, *रीडर*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कृष्ण कुमार, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

चंदन यादव, संस्था *मुस्कान* 5, पत्रकार कॉलोनी, लिंक रोड नं. 3, भोपाल

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर*, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मालविका राय, *शिक्षिका*, हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

रमेश कुमार, *प्रवक्ता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्रवक्ता*, जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली

सोनिका कौशिक, *कंसलटेंट*, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

**सदस्य समन्वयक**

लता पाण्डे, *प्रवाचक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

# आभार

हम प्रोफ़ेसर कृष्णकांत वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में हर संभव सहयोग दिया।

परिषद् उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट नयी दिल्ली; *निदेशक, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *राजकमल प्रकाशन*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *रत्न सागर प्राइवेट लिमिटेड*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *किताब घर*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *साहित्य अकादमी* दिल्ली; प्रकाशक, *एकलव्य*, भोपाल; के हम आभारी हैं।

*रात भर बिलखते–चिंघाड़ते रहे* पाठ में छपी तसवीरों में सहयोग के लिए विजय बेदी के हम आभारी हैं।

हम माधवी कुमार, *रीडर*, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; के आभारी हैं, जिन्होंने रचनाओं के चयन में सहयोग दिया।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए शाकंबर दत्त, इंचार्ज कंप्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; सीमा मेहमी, नरेश कुमार, विजय कौशल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

# कहाँ क्या है


आमुख *iii*

बड़ों से दो बातें *v*

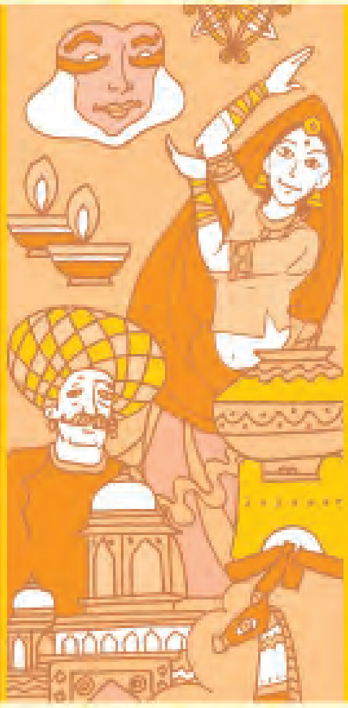

*अपनी-अपनी रंगतें* 1

1. राख की रस्सी (*लोककथा*) 5

*दुनिया की छत 11

2. फ़सलों के त्योहार (*लेख*) 13

3. खिलौनेवाला (*कविता*) 20

*ईदगाह 24

*हवाई छतरी 32

4. नन्हा फनकार (*कहानी*) 33

5. जहाँ चाह वहाँ राह (*लेख*) 41

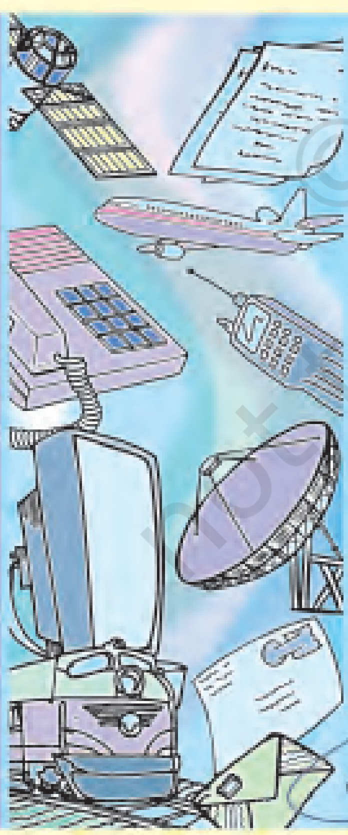

*बात का सफ़र* 47

*पत्र 51

6. चिट्ठी का सफ़र (*लेख*) 52

7. डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी (*भेंटवार्ता*) 58

8. वे दिन भी क्या दिन थे (*विज्ञान कथा*) 62

9. एक माँ की बेबसी (*कविता*) 68

© NCERT not to be republished

**मज़ाखटोला** 73

10. एक दिन की बादशाहत (*कहानी*) 77

11. चावल की रोटियाँ (*नाटक*) 83

12. गुरु और चेला (*कविता*) 93

*बिना जड़ का पेड़ 101

13. स्वामी की दादी (*कहानी*) 103

*कार्टून 108


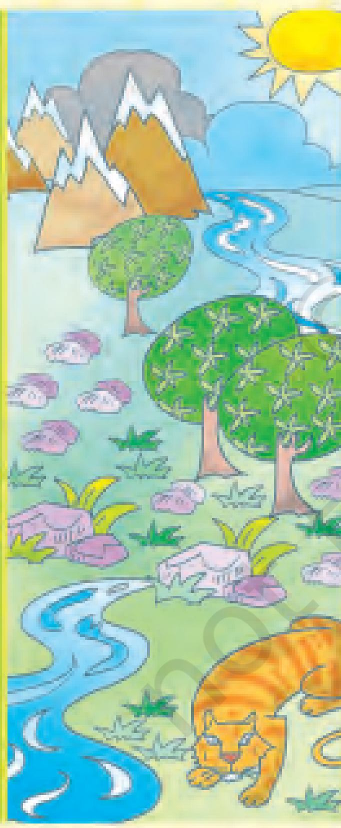


**आस-पास** 110

14. बाघ आया उस रात (*कविता*) 113

*एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ 117

15. बिशन की दिलेरी (*कहानी*) 118

*रात भर बिलखते-चिंघाड़ते रहे 126

16. पानी रे पानी (*लेख*) 128

*नदी का सफ़र 132

17. छोटी-सी हमारी नदी (*कविता*) 134

*जोड़ासाँको वाला घर 137

18. चुनौती हिमालय की (*यात्रा वर्णन*) 140

*हम क्या उगाते हैं 147

शब्दार्थ 148


© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished

# अपनी-अपनी रंगतें

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

# अपनी-अपनी रंगतें

इस भाग में शामिल की गई रचनाएँ ऐसी चीज़ों के बारे में हैं जिन्हें आम तौर पर संस्कृति के अंतर्गत रखा जाता है। संस्कृति शब्द का दायरा बहुत बड़ा है। इसके अंदर विरासत भी शामिल है। अब शायद यह सोचना ज़रूरी है कि विरासत किसे कहते हैं। विरासत में उन सब बातों और चीज़ों को शामिल किया जाता है जो हमें अपने पूर्वजों की याद दिलाती हैं। पुरानी इमारतें और स्मारक, चित्र और पुस्तकें, बगीचे और सड़कें ऐसी चीज़ों में शामिल हैं। इस तरह की विरासत को हम अपनी आँखों से देख सकते हैं, लेकिन विरासत के और भी कई रूप हैं जो हमारे जीवन में इतने घुल-मिल गए हैं कि अक्सर हम उनके बारे में अलग से नहीं सोचते। उदाहरण के तौर पर जो खाना हम रोज़ खाते हैं, विशेष दिनों पर जो पकवान और मिठाइयाँ बनाते हैं, या जो कपड़े हम पहनते हैं, ये सब हमारी विरासत का अंग हैं और हमारे रोज़ाना के जीवन का अंग बन गए हैं। यदि हम इनमें अपनी भाषा, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यताओं और जीवन-शैली को जोड़ लें तो ये सारी बातें मिलकर हमारी **संस्कृति** कहलाएँगी।

पाठ्यपुस्तक के इस भाग में शामिल रचनाएँ संस्कृति के कुछ विशेष पहलुओं को उभारती हैं। **खिलौने वाला** शीर्षक कविता कई खिलौनों की याद दिलाती है जिनसे बच्चे खेलते रहे हैं। कविता में जिन खिलौनों का ज़िक्र आया है, उनमें से कुछ खिलौने मशीनों से बनाए जाते हैं, लेकिन ऐसे भी कई खिलौने बाज़ार में मिलते हैं जो मिट्टी, कपड़े या लकड़ी से बनाए जाते हैं। इन खिलौनों को हाथ से भी बनाया जा सकता है। इस तरह के पारंपरिक खिलौने भारत के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग रूप में बनाए जाते हैं। हमारे देश के हर हिस्से में मिट्टी या कपड़े की गुड़िया बनाने का रिवाज रहा है। गुड़िया के कपड़े, बाल और जूते उस इलाके की जीवन-शैली से मेल खाते हैं जहाँ वे बनाए गए हों। इस दृष्टिकोण से गुड़िया की आकृति और उसकी वेशभूषा में पाई जाने वाली अलग-अलग तरह की सुंदरता को हम भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक अच्छा उदाहरण या प्रतीक मान सकते हैं। हमारे देश में ऐसे कई त्योहार हैं जिन्हें मनाते समय खास तरह के खिलौने बनाने का रिवाज है। सावन के महीने में मिट्टी के खिलौने, लकड़ी की चकरियाँ और लट्टू बनाए जाते हैं। लकड़ी के इन खिलौनों पर लाख के रंगों की चमकदार पालिश रहती है।

© NCERT not to be republished

**फ़सलों का त्योहार** शीर्षक लेख में फ़सलों से जुड़े उत्सवों का ज़िक्र किया गया है जो देश के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से मनाए जाते हैं। ये त्योहार भी भारत की सांस्कृतिक विविधता का सुंदर नमूना है। इस पाठ को पढ़कर यह समझा जा सकता है कि संस्कृति में कितनी सारी बातें शामिल रहती हैं जो एक तरफ़ प्रकृति और भूगोल से संबंधित हैं तो दूसरी तरफ़ मनुष्य के द्वारा बनाई गई सामग्री से।

खाने-पीने की चीज़ें और कपड़े इसलिए बनाए जाते हैं क्योंकि उनके बिना हम जी नहीं सकते। लेकिन ऐसी भी कई चीज़ें मनुष्य रचता है जो सीधे-सीधे किसी उपयोग में नहीं आतीं, फिर भी हमारे जीवन में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि वे सुंदर हैं। **नन्हा फ़नकार** कहानी एक ऐसे लड़के के बारे में है जो पत्थर को तराशकर उन पर घंटियाँ बनाता था। देश का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, कपड़े या कागज़ की मदद से सुंदर चीज़ें न बनाई जाती हों। भारत की हस्तकला सारी दुनिया में अपनी सुंदरता के लिए मशहूर हैं। कपड़े पर कढ़ाई करना ऐसा ही एक कौशल है जिसका महत्व **जहाँ चाह वहाँ राह** शीर्षक रचना में समझा जा सकता है। हमारे घर पर तकिए का गिलाफ़, मेज़पोश या फिर माँ की शाल पर रंगीन धागों की कढ़ाई देखी जा सकती है। बच्चे इस कढ़ाई को बारीकी से देखें और सुई-धागा लेकर खुद ऐसी कढ़ाई करने की कोशिश करें तो वे समझ जाएँगे कि यह काम कितनी मेहनत माँगता है। गुड़िया, मिठाई और त्योहारों की तरह ही कढ़ाई की सैंकड़ों शैलियाँ हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों में पाई जाती हैं।

संस्कृति का ही एक और रूप पुरानी कहानियों में अभिव्यक्त होता है। जो कहानियाँ सैकड़ों वर्षों से चली आ रही हैं, उन्हें **लोककथा** कहते हैं। ये कहानियाँ आज हमें किताबों में पढ़ने को मिलती हैं, लेकिन पुराने समय से लेकर आज तक ये लोगों की स्मृति में ही जीवित रही हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से सुनाई जाती रही हैं। दुनिया के हर समाज में लोककथाएँ सुनी-सुनाई जाती हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ मिलती-जुलती होती हैं लेकिन हर जगह की लोककथा अपना कुछ अलग रूप भी लिए रहती है। **राख की रस्सी** शीर्षक कहानी **तिब्बत** की लोककथा है जो हमें वहाँ के समाज की एक झलक देती है। हम यदि अपने आस-पास के इलाकों की लोककथाएँ पढ़ें या किसी बड़े-बूढ़े से सुनें तो उस कहानी में भी समाज, संस्कृति और इतिहास के बारे में बहुत सारी बातें जान सकेंगे।

© NCERT not to be republished